

सुहावन सिंहरो

(१२३)

तुंहिजो अनोखो सींगारु आ मन मोहन प्यारे।

यशुमति जीवन आधार आं मन मोहन प्यार॥

मस्तक मुकुटु ऐं सिंहरो सुहावनु रूपु रसीलो आहे मनु भावनु।

दूलह श्याम सुकुमार आ मन मोहन प्यार॥

भाल विशाल ऐं आंखें कजरारी लालु चपनि जी आ लाली मनहारी।

दशन दमकि दिलदार आ मन मोहन प्यार॥

जामो ज़रीअ जो गले बनमाला नील मणी अ जियां प्यारो नंद लाला।

रसिकनि मणि रिझिवार आ मन मोहन प्यार॥

सांवरो दूलहु दुलहनि गौरी लखि लाजत रति काम किरोड़ी।

प्रेमियुनि पालण हार आ मन मोहन प्यार॥

अगिनि साखी करे फेरा पाइनि मधुर चालि सां था हंस लज़ाइनि।

मिठी नूपुर झंकार आ मन मोहन प्यार॥

विधिना भली बणाई जोड़ी नंद नंदनु वृषभानु किशोरी।

तनु मनु धनु बलहार आ मन मोहन प्यार॥

साई मैया जो जीवनु युगल वर सदां रक्षकु थियेव दानी अवढरु।

सभिनी सुखनि जो भण्डार आ मन मोहन प्यार॥